पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र प्रयागराज

FOREST RESEARCH CENTRE FOR ECO-REHABILITATION PRAYAGRAJ

IN-HOUSE SEMINAR ON
DEALING MARKETING CONSTRAINTS IN AGROFORESTRY
कृशि–वानिकी में विपणन अवरोध

पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज में दिनांक 05.12.2019 को **''Dealing Marketing Constraints in Agroforestry (कृशि–वानिकी में विपणन अवरोध)''** विषय पर एक दिवसीय आंतरिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में डा0 बिस्वरूप मेहरा, प्रोफेसर, इलाहाबाद कृषि विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने भाग लिया। केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होने विशिष्ट विषयक आन्तरिक संगोष्ठी तथा सम्बन्धित वैज्ञानिक चर्चा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि सम्मिलित चर्चा द्वारा अनुसंधान क्षेत्र में नवीन आयाम प्राप्त किया जा सकता है।

संगोष्ठी की संयोजक डा0 अनुभा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक द्वारा **कृशि–वानिकी में विपणन अवरोध** विषय पर अनुभव आधारित प्रस्तुतीकरण किया गया। डा0 श्रीवास्तव ने कृषि वानिकी के महत्वपूर्ण व्यावसायिक वृक्ष प्रजातियों यथा यूकेलिप्टस, पॉपलर, सागौन, मीलिया आदि तथा औषधीय पौधों की वर्तमान विपणन व्यवस्थाओं तथा बिक्री में आने वाले अवरोधों पर विस्तार में चर्चा किया। उन्होने वृक्ष प्रजातियों के कटान तथा ढुलान परमिट सम्बन्धित नियमों की जानकारियां दी। उन्होने कृषि वानिकी सम्बन्धित काष्ठ विपणन हेतु काष्ठ आधारित उद्योगों–यथा आरा मशीन, प्लाइवुड, वीनियर, उद्योगों तथा औषधीय पौधों के विपणन हेतु ई–चरक (ऑनलाइन बिक्री हेतु) तथा सम्बन्धित उद्योगों के सम्पर्क सूत्रों पर चर्चा की तथा कृषि वानिकी उपज की बिक्री में उत्पादक–व्यापारी (उद्यमी) सम्पर्क को मुख्य कारक बताया। निश्चित समयावधि पर इस विषय पर उत्पादक–उद्यमी के एक मंच पर प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन भविष्य में क्षेत्र विशेष में कृषि वानिकी को व्यवस्थित करने हेतु सहायक सिद्ध हो सकता है।

अतिथि वक्ता डा0 मेहरा ने कृषि वानिकी में नयी प्रजातियों को बढ़ावा देने पर चर्चा की। आन्तरिक चर्चा के अन्तर्गत केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने सहजन, एक बहुउद्देश्यीय वृक्ष को कृषि वानिकी में गैर काष्ठ उत्पाद के रूप में समायोजित करने हेतु सुझाव दिया। डा0 संजय सिंह तथा डा0 बिस्वरूप मेहरा ने क्षेत्र विशेष में पॉपलर आधारित कृषि वानिकी को बढ़ावा देने हेतु सुझाव दिया। डा0 कुमुद दूबे, वैज्ञानिक ने क्षेत्र विशेष में ***मीलिया डूबिया*** के महत्व को बताया तथा कृषि वानिकी में इसकी उपयोगिता तथा व्यावसायिक महत्व पर चर्चा किया। डा0 अनीता तोमर, वैज्ञानिक ने पॉपलर के क्षेत्र विशेष हेतु उन्नत क्लोन्स तथा वर्तमान में चल रही कृषि वानिकी परियोजना पर भी प्रकाश डाला। डा0 मेहरा ने बांस आधारित कृषि–वानिकी में बांस की बिक्री हेतु उपलब्ध पेपर उद्योगों तथा वर्तमान बिक्री दर पर भी प्रकाश डाला। डा0 संजय सिंह, केन्द्र प्रमुख ने बांस आधारित उद्योगों तथा खाद्य योग्य बांस प्रजातियों को बढ़ावा देने का सुझाव दिया। संगोष्ठी में करौंदा तथा अन्य उपयोगी प्रजातियों को जैविक बाड़ के रूप में लगाने पर भी चर्चा की गयी। डा0 अनुभा श्रीवास्तव द्वारा ***फ्लेमेंजिया*** (लाख के प्रवर्धन में उपयोगी) प्रजाति के कृषि वानिकी में लगाने के व्यावसायिक महत्व पर चर्चा किया।

केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन सम्बन्धित विषय पर केन्द्र द्वारा एक टेक्निकल बुलेटिन प्रकाशित करने का सुझाव दिया तथा केन्द्र द्वारा कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन हेतु एक मोबाइल एप बनाने का भी सुझाव दिया। इसके अतिरिक्त अन्य अवरोधों यथा उच्च गुणवत्ता की पौध सामग्री, पौधों के रख रखाव, निष्कर्षण, भण्डारण तथा बिक्री सम्बन्धित अन्य पहलुओं को भी चर्चा में समायोजित किया गया। साथ ही अनुसंधान तथा प्रशिक्षण कार्य में राज्य वन विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, विश्वविद्यालय, अन्य वानिकी अनुसंधान संस्थाओं के साथ सहयोगात्मक कार्य पर बल दिया गया। कार्यक्रम में केन्द्र के तकनीकी अधिकारीगण, डा0 एस0डी0 शुक्ला तथा रतन गुप्ता, शोधार्थीगण तथा अन्य अतिथियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन डा0 अनुभा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

RECOMMENDATIONS

Identification of Research Needs:

- *Introduction of Moringa oleifera as multi-purpose tree species in agroforestry plantation trials and to commercialize Moringa plant parts i.e. leaf, pods, flowers in many ways in industrial applications in view of their acceptability in national and international markets*
- *To establish Poplar based agroforstry with suitable clones for this region and commercialize in wood based industries as plywood and veneer etc.*
- *To develop linkages between traders and growers for end produces of agroforestry through research projects and training programmes*
- *The projects on bio-fencing may be taken up with promising species as Desi Babool and Karaunda in field trials .*

Formulation of future strategies/Road map:

- *To promote Bamboo based agroforestry for common species of the region and channelize its market with paper industries. Efforts may be taken up for introduction of Edible Bamboo species for commercial uses.*
- *Introduction of Flemingia sp. In agroforestry for commercial uses of Lac.*
- *Consortium mode of agroforestry may be developed involving all partners with special focus on suitable species, quality planting material and market places with good returns to the farmers.*
- *Training and extension programmes may be organized for establishing linkages between traders and growers with farmers/tree growers, wood industry partners, Academicians / Researchers and state forest department*

- *Efforts for implementing minimum support price (MSP) for agroforestry produces may be taken up with the collaboration of UPSFD.*

Networking research option & opportunities:

- *Collaboration with SFD, KVKs, Universities, Forestry colleges and other research organizations for making the marketing process more simplified*
- *To Publish a technical bulletin on – Agroforestry in Eastern UP : Strategies for solution of Marketing Constraints*
- *To develop a mobile app on agroforestry to update the market rate for farmers*

संगोश्ठी की कुछ झलकियां

DEALING MARKETING CONSTRAINTS IN AGROFORESTRY
In - house Seminar
FOREST RESEARCH CENTRE FOR ECO-REHA

DEALING MARKETING CONSTRAINTS IN AGROFORESTRY
In - house Seminar
MANDATE
• To undertake focused research on rehabilitation of degraded ecosystems and difficult /stress sites and promotion of Agro-forestry
• To disseminate available technologies/processes/tools to user groups for conservation and

DEALING MARKETING CONSTRAINTS IN AGROFORESTRY
In - house Seminar
FRCER

DEALING MARKETING CONSTRAINTS IN AGROFORESTRY
In - house Seminar

Points of Discussion
FRCER

DEALING MARKETING CONSTRAINTS IN AGROFORESTRY
In - house Seminar

सहजसत्ता
प्रयागराज, 7 दिसम्बर 2019

कृषि वानिकी की विपणन समस्याओं पर संगोष्ठी का आयोजन

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र प्रयागराज द्वारा कृषि वानिकी की विपणन समस्याओं पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ केन्द्र के प्रमुख डा0 संजय सिंह एवं अन्य वरिष्ठ प्रतिभागियों द्वारा दीप प्रज्वलित करके हुआ। कार्यक्रम की संयोजिका डा0 अनुभा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक द्वारा मुख्य अतिथि डा0 विश्वरूप मेहरा, प्रोफेसर शुआट्स, प्रयागराज का स्वागत किया। डा0 संजय सिंह द्वारा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार) के आन्तरिक संगोष्ठी कार्यक्रमो के विचारधाराओं एवं उद्देश्यों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी। डा0 अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कृषि वानिकी की विपणन समस्याओं के निस्तारण पर व्याख्यान प्रस्तुत करने के साथ ही कृषि वानिकी के क्षेत्र में किसानो को आने वाली समस्याओं एवं उनके निदान पर भी चर्चा की गयी। संगोष्ठी में लगभग 35 प्रतिभागियों में केन्द्र के वैज्ञानिक डा0 कुमुद दूबे, डा0 अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डा0 अनुभा श्रीवास्तव के साथ केन्द्र के अनुसंधान अध्येताओं सहित कृषक व अन्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र भी सम्मिलित थे।

प्रयागराज, 6 दिसंबर 2019 दैनिक जागरण 9

कृषि वानिकी की विपणन समस्याओं पर हुई गोष्ठी

प्रयागराज : पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र मम्फोर्डगंज में कृषि वानिकी की विपणन समस्याओं पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने किया। इसमें डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कृषि वानिकी की विपणन समस्याओं के निस्तारण पर व्याख्यान दिया। संगोष्ठी में करीब 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. विश्वरूप मेहरा, डॉ. कुमुद दुबे, डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव आदि मौजूद रहे।